आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

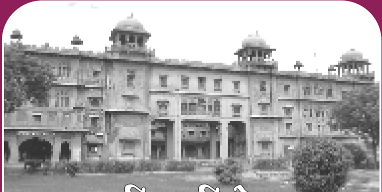

प्रसार शिक्षा निदेशालय
राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 6 अंक : 6 फरवरी-2019 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

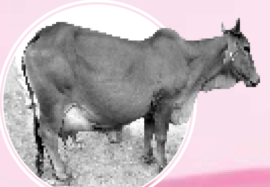

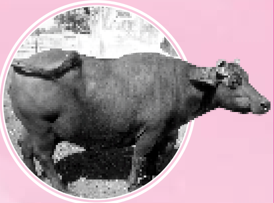

राजुवास में गणतंत्र-दिवस 2019 समारोह के मुख्य अतिथि वेटनरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने ध्वजारोहण कर सलामी दी। कुलपति ने इस अवसर पर 107 विद्यार्थियों को उत्कृष्ट शैक्षणिक एवं विशिष्ट उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया। समारोह में छात्र-छात्राओं ने देशभक्ति से ओत-प्रोत रंगा-रंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया।
इस अवसर पर माननीय कुलपति महोदय प्रो. विष्णु शर्मा के उद्बोधन के अंश यहां प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

सम्मानित अतिथिगण, राजुवास के डीन–डॉयरेक्टरस, फैकल्टी सदस्य, अधिकारी, कर्मचारी बंधुओ, प्रिय विद्यार्थियों, राजुवास परिवार के सदस्यगण, उपस्थित संभ्रान्त नागरिकों, प्रेस और मीडिया के बंधुओ, उपस्थित महिलाओं और बच्चो !

देश के 70वें गणतंत्र दिवस के राष्ट्रीय पर्व पर मैं, आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ। बंधुओ ! दुनिया में सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश होने का हमें गौरव है। देश को आजाद करवाने के लिए लम्बे चले स्वतंत्रता संग्राम में स्वतंत्रता सेनानियों, शहीदों और आजादी के दीवानों ने अपने प्राणों की आहूतियां दी। आज का यह दिवस लोकतांत्रिक व्यवस्था में हमारी निष्ठा और तन, मन और धन से देश सेवा का संकल्प लेने का है। टीम राजुवास के प्रयासों से एक सुदृढ़ वित्तीय आधार पर खड़े विश्वविद्यालय को नई ऊँचाईयों पर ले जाने के लिए हमें कड़ी मेहनत और लगन से कार्य करने की जरूरत है। हम सभी के मिले–जुले प्रयासों, अनुशासन और संयम से कार्य संस्कृति को विकसित कर राजुवास को देश का एक अव्वल संस्थान बनायेंगे, ऐसी मुझे आशा है। वेटरनरी विश्वविद्यालय ने वर्ष 2010 में अपनी स्थापना के गत 8 वर्षों के अल्प काल में शैक्षणिक, अनुसंधान और प्रसार गतिविधियों में चहुंमुखी विकास के साथ देश के अग्रणीय विश्वविद्यालयों में अपना एक विशिष्ट स्थान बनाने में सफलता अर्जित की है।

विश्वविद्यालय ने अब तक राज्य के 22 जिलों में अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई है। अनुसंधान और प्रसार शिक्षा के प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण के लिए अनेकों कदम उठाए गए हैं। पशुधन अनुसंधान केन्द्रों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए बीछवाल में पशु आहार उत्पादन और अन्य केन्द्रों पर जैविक उत्पाद के प्रयास शुरू किए हैं। विश्वविद्यालय पशुपालकों को उन्नत नस्ल के बछड़ों–बछड़ियां उपलब्ध करवाने के लिए प्रयत्नशील हैं। राष्ट्रीय कृषि उच्च शिक्षा परियोजना में 30 करोड़ रू. राशि के प्रस्ताव भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् को भिजवाए गए हैं। इससे राजुवास में अनुसंधान में नवाचार और प्रशासनिक सुदृढ़ीकरण कार्य हो सकेगा। विश्वविद्यालय को इस वर्ष भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् से 65 लाख रू. राशि का विशेष अनुदान मिला है जिससे परीक्षा कक्ष भवन निर्माण किया जा सकेगा। पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर के लिए राज्य सरकार से 1 करोड़ रू. राशि स्वीकृत हुई है जिससे वहां छात्र–छात्राओं के छात्रावास का निर्माण करवाया जाएगा। राजुवास में व्याख्यान कक्षों की स्मार्ट क्लास रूम में तब्दील किया गया है। प्रसार शिक्षा के तहत गत वर्ष के 11 माह की अवधि में ग्रामीण क्षेत्रों में 1046 वैज्ञानिक पशुपालक शिविरों का आयोजन कर 32 हजार 677 पशुपालक व कृषकों और टोल–फ्री हैल्प लाइन द्वारा 75 हजार से भी अधिक कॉल्स द्वारा किसानों, पशुपालकों, छात्र–छात्राओं और अन्य लोगों को लाभान्वित किया गया। देश के एक ख्यातनाम विश्वविद्यालय के महत्वपूर्ण अंग के रूप में पूरी जिम्मेदारी और मेहनत से हमें अपने कार्यों को अंजाम देकर समाज और देश के विकास में अपना योगदान करना है। आओ, हम सब मिलकर देश और दुनिया की रफ्तार के साथ चलकर राजुवास को एक अव्वल पशुचिकित्सा शिक्षा और पशुपालन सेवा का मंदिर बनाएं। आप सभी को एक बार पुनः गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिन्द!

(प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा)

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

मुख्य समाचार

ऊर्जा मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला ने राजुवास प्रदर्शनी का किया अवलोकन

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर द्वारा बेर दिवस के अवसर पर केन्द्रीय शुष्क बागवानी संस्थान, बीकानेर में विश्वविद्यालय स्तरीय प्रदर्शनी का आयोजन 27 जनवरी 2019 को किया गया। समारोह में डॉ. बी.डी. कल्ला, जल संसाधन एवं ऊर्जा मंत्री, राजस्थान सरकार एवं संस्थान के निदेशक डॉ. पी.एल. सरोज सहित कई गणमान्य व्यक्तियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया। प्रदर्शनी में राज्य के देशी गौवंश और राजुवास की पशुपालन सम्बन्धी तकनीकों का प्रदर्शन किया गया।

प्राइड ऑफ इण्डिया एक्सपो में राजुवास प्रदर्शनी स्टॉल को मिला पुरस्कार

फगवाडा (पंजाब) में 7 जनवरी को 106 वीं इण्डियन साइंस कांग्रेस द्वारा आयोजित प्राइड ऑफ इण्डिया एक्सपो में वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी स्टॉल को "स्पेशल रिकगनिशन" केटेगरी में पुरस्कृत किया गया है। 3 से 7 जनवरी, 2019 तक आयोजित मेगा एक्सपो का उद्घाटन माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा किया गया था। "फ्यूचर इण्डिया : साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी" थीम पर देशभर के अग्रणी विज्ञान एवं तकनीकी संस्थानों ने इसमें शिरकत की। राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. ए.पी. सिंह ने बताया कि राजुवास प्रदर्शनी स्टॉल में राज्य के देशी गोवंश और पशुचिकित्सा एवं पशु पोषण की राजुवास तकनीकों का प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शनी में राजुवास द्वारा पशुपालकों के हित में प्रकाशित वैज्ञानिक सामग्री का वितरण भी किया गया।

जिले के 46 पशुधन सहायकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

पशु जैव अपशिष्टों का वैज्ञानिक निस्तारण जन स्वास्थ्य के लिए जरूरीः कुलपति प्रो. शर्मा

पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित प्रबंधन और निस्तारण पर वेटरनरी विश्वविद्यालय में जिले के 46 पशुधन सहायकों का एक दिवसीय प्रशिक्षण 15 जनवरी को संपन्न हो गया। वेटरनरी कॉलेज के जन स्वास्थ्य विभाग के सभागार में वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने प्रशिक्षण संभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान करते हुए कहा कि पशु जैव अपशिष्ट का सही निस्तारण समाज और जन स्वास्थ्य के व्यापक हित में एक आवश्यक कार्य है। पशुचिकित्सा में अनुसंधान, पशु उपचार, प्रयोगशाला जांचों के दौरान होने वाले जैविक अपशिष्टों से विषाणु एवं घातक जीवाणुओं से संक्रमण का खतरा रहता है अतः इन्हें उपयुक्त तरीके से अलग–अलग करके सुरक्षित तरीके से निस्तारित किया जाना बहुत आवश्यक है। ऐसा नहीं करने से मनुष्य, पशु और पर्यावरण को गंभीर खतरा हो सकता है। राज्य सरकार ने इसके महत्व को समझते हुए वेटरनरी विश्वविद्यालय में पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट तकनीकी निस्तारण केन्द्र की स्थापना की है। इस तकनीकी केन्द्र में शोध और अनुसंधान के साथ ही प्रशिक्षण कार्यक्रम किए जा रहे हैं। पशु जैव अपशिष्ट की तकनीकों को अस्पताल में अपनाएं और गांव लोगों तक पहुँचाकर उन्हें जागरूक करें। इस अवसर पर पशु जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट तकनीकी निस्तारण केन्द्र की प्रमुख अन्वेषक डॉ. रजनी जोशी ने बताया कि प्रशिक्षण में अपशिष्ट निस्तरण की लघु फिल्म प्रदर्शन, प्रायोगिक कार्यों और विशेषज्ञ व्याख्यानों का आयोजन किया गया। प्रो. राकेश राव ने अपने व्याख्यान में बताया कि अपशिष्ट का निस्तारण स्वच्छता अभियान का हिस्सा है अतः पशुधन सहायकों को इसके दुष्परिणामों के प्रति आमजन को जागरूक करना है। गढ्ढा खोदकर ऐसे अपशिष्टों को जमींदोज कर देना चाहिए। प्रशिक्षण में डॉ. मनोहर सेन और डॉ. पंकज मंगल ने भी व्याख्यान प्रस्तुत किये।

आडसर में उन्नत पशुपोषण पर प्रशिक्षण सम्पन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबन्धन एवं तकनीक केन्द्र द्वारा लूणकरनसर के आडसर ग्राम में 9 जनवरी को एक दिवसीय

पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. दिनेश जैन ने बताया कि उन्नत पशुपोषण एवं हरा चारा उत्पादन विषय पर आयोजित प्रशिक्षण में 48 किसान व पशुपालकों ने भाग लिया। उन्होंने बताया कि पशुओं से अधिक उत्पादन लेने के लिए पशु पोषण का उचित प्रबन्धन जरूरी है। पशु आहार में हरे चारे का महत्व है, अतः किसान भाइयों को वर्ष भर चारे की उपलबध्ता बनाए रखने लिये हरे चारे के उत्पादन के साथ ही इसको साइलेज बना कर संरक्षित करना चाहिए। प्रशिक्षण शिविर में केन्द्र के विशेषज्ञ श्री दिनेश आचार्य एवं श्री महेन्द्र सिंह मनोहर ने हरा चारा उत्पादन, अजोला उत्पादन तकनीक, हरे चारे के संरक्षण की सायलो बैग तकनीक तथा यूरिया मोलासिस मिनरल ब्लॉक तकनीक के बारे में पशुपालकों को विस्तार पूर्वक जानकारी दी।

भादरा के 40 पशुपालकों ने राजुवास भ्रमण कर वैज्ञानिक पशुपालन के तरीके जाने

हनुमानगढ़ जिले के भादरा तहसील से 40 कृषकों और पशुपालकों के एक दल ने 16 जनवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय का भ्रमण करके पशुपालन तकनीक और पशु उपचार कार्यों की जानकारी ली। उप निदेशक एवं पदेन परियोजना निदेशक (आत्मा), कैफेटेरिया बी–4 (बी) हनुमानगढ़ के अंतरराज्यीय कृषक भ्रमण के तहत पशुपालक यहां पहुँचे। प्रसार शिक्षा के सहायक प्राध्यापक डॉ. अतुल शंकर अरोड़ा ने उन्हें हाइड्रोपोनिक्स तकनीक से चारा उत्पादन और सेवण व अजोला उत्पादन इकाईयों का अवलोकन करवाया। पशुपालकों ने वेटरनरी कॉलेज की क्लिनिक्स में जाकर पशुओं की चिकित्सा एवं आधुनिक उपचार सेवाओं का जायजा लिया। कृषकों ने तकनीकी म्यूजियम का अवलोकन करके पशुओं की विभिन्न नस्लों, चिकित्सा तकनीकों और उपयोगी पशुधन उत्पादों की जानकारी ली।

राजुवास में 40 पशुपालकों का आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण संपन्न

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु आपदा प्रबंधन तकनीक केन्द्र के सभागार में 22 जनवरी को एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर आयोजित किया गया। केन्द्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. प्रवीण बिश्नोई ने बताया की पशु आपदा प्रबंधन प्रशिक्षण में 40 पशुपालकों ने भाग लिया। उन्होंने बताया की आपदा के दौरान पशुओं की उचित उपचार व बचाव के लिए अपनाई जाने वाली तकनीकों की विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। केन्द्र के आपदा प्रबंध विशेषज्ञ शैलेन्द्र सिंह ने पशु आपदा प्रबंधन योजना की जानकारी प्रदान कर बताया कि आपदा के समय पशु हानि को न्यूनतम कैसे किया जाये। डॉ. सोहेल मोहम्मद ने केन्द्र के द्वारा विकसित तकनीकों से अवगत करवाया।

राजुवास द्वारा गोद लिए जयमलसर को स्मार्ट विलेज बनाने की मुहिम शुरू

जयमलसर बनेगा आदर्श गांव की नजीर : कुलपति प्रो. शर्मा

राज्यपाल के निर्देशानुसार वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा गोद लिए जयमलसर गांव को अब स्मार्ट विलेज के रूप में विकसित किया जाएगा। मिशन अन्त्योदय के तहत वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा डाइयां को स्मार्ट विलेज में तब्दील किए जाने के बाद अब जयमलसर के सर्वागींण विकास की योजना पर कार्य शुरू किया गया है। 28 जनवरी को वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में "समार्ट विलेज" बाबत आयोजित पहली बैठक में जिला कलक्टर कुमारपाल गौतम सहित जिला स्तरीय विभागों के अधिकारी और राजुवास के अधिकारियों ने विचार–विमर्श किया। राजुवास कुलपति सचिवालय में आयोजित बैठक में जिला कलक्टर कुमारपाल गौतम ने कहा कि जयमलसर को एक आदर्श और स्मार्ट गांव में विकसित करने का एक महत्ती अवसर मिला है। राजुवास और जिले के सभी विभागों के समन्वय और कार्यों से जिले में इसे एक आदर्श गांव की नजीर प्रस्तुत करनी है। इससे अन्य गांवों को भी विकसित करने की प्रेरणा मिलेगी। उन्होंने कहा कि गांव की जरूरतों, आर्थिक स्थिति और सामुदायिक सेवाओं का आंकलन घर–घर जाकर सर्वे के द्वारा किया जाए। बैठक में कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि राज्यपाल महोदय की इस महत्ती योजना में उसी भावना के साथ धरातल पर कार्य होना चाहिए। जयमलसर की कार्य योजना का ग्राम सभा में अनुमोदन के पश्चात् राज्यपाल महोदय को प्रेषित कर दी गई है। राजुवास जिला स्तरीय विभागों के सहयोग के लिए तकनीकी सहायता और मानव संसाधन सुलभ करवाकर कार्यों की सघन मॉनिटरिंग करेगा। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के छात्र–छात्राएं घर–घर जाकर सर्वे करके लोगों की आर्थिक स्थिति, सामुदायिक जरूरतों, कल्याणकारी योजनाओं के लाभ के बारे में पूरी जानकारी एकत्रित करेंगे। गांव के चहुँमुखी विकास के लिए हरसंभव सहयोग और सहायता प्रदान की जाएगी। बैठक में नोडल अधिकारी डॉ. नीरज शर्मा ने "डाइयां" गांव को स्मार्ट विलेज बनाने के लिए किए गए कार्यों का सचित्र प्रस्तुतीकरण किया। जिला कलक्टर ने इसकी सराहना की। राजुवास के कुलसचिव प्रो. हेमन्त दाधीच ने जयमलसर की कार्य योजना की जानकारी देते हुए बताया कि गांव में गौशाला निर्माण, गोचर में चारागाह विकास, कन्या माध्यमिक विद्यालय की स्थापना, लिंक सड़कों के निर्माण, जल संरक्षण कार्य, चिकित्सा, आयुर्वेद, योग चिकित्सा, योग–रोजगार शिविरों के आयोजन, कृषि आदान और खेलकूद सुविधाओं के बाबत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। जयमलसर के सरपंच पवन कुमार ने ग्राम पंचायत और गांववासियों के पूर्ण सहयोग का विश्वास दिलाया।

if'k{k.k lekpkj

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 5, 7, 9, 19, 22 एवं 25 जनवरी को गांव जोड़ी, जवानिपुरा, कालेरा की ढाणी, किकासर, सहजासर, रामपुरा पट्टा झारिया गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 218 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) केन्द्र द्वारा पशुपालक प्रशिक्षित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर) द्वारा 14, 16, 17, 19 एवं 22 जनवरी को गांव 1केएसएम, 13 एसडी, रतनपुरा, 9 आरजेडी एवं 54 जीबी गांवो में तथा 9 एववववव25 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 18 महिला पशुपालकों सहित कुल 215 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 5, 7, 9, 11, 16, 18, 22, एवं 25 जनवरी को ग्राम भीम्योर जी, अनापुरा, हिम्मतपुरा, आमलारी, मुरी,केरलापादर, बारेवडा एवं मोरली गांवो में एवं 24 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 267 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 7, 8, 9, 11, 14, 15, 16 एवं 18 जनवरी को गांव चांदपुरा, पदमपुरा, हिराणी, खारिया, उदयपुरार, श्रवणपुरा, दुजार एवं आसपुरा गांवों में तथा दिनांक 25 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 151 महिला पशुपालकों सहित 267 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

अजमेर केन्द्र द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 5, 7, 8, एवं 9 जनवरी को गांव मोतीपुरा, खायड़ा, सिंघावल एवं धांतोल गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 117 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, डूंगरपुर द्वारा प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 8, 11, 17, 19 एवं 23 जनवरी को गांव डेटकों का वेला, गोकुलपुरा, भाटपुर, धामनिया एवं हिम्मतपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 132 महिला पशुपालक सहित कुल 140 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण शिविर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3, 4, 5, 7, 8, 9, 11, 16, 18, 19 एवं 22 जनवरी को गांव नगला कोकला, भोट, बोसौली, नगला मैथना,चकवल टीकरी, बरका, गोबरा, आंखोली, पपरेरा एवं पार गांवों में तथा 21 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 22 महिला पशुपालकों सहित कुल 200 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 16, 17, 18, 21, 22, 23 एवं 24 जनवरी को गांव पालड़ा, इन्दोकिया, टोपा, लावा, भगवानपुरा, चिंरोज एवं देवली भांची गांवो में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 225 पशुपालकों एंव कृषकों ने भाग लिया।

लूनकरणसर केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 11, 15, 21, 22, 23 एवं 24 जनवरी को गांव मनाफरसर, कुचौर, आथुनी, रिडी, राजपुराहड़ान एवं बाना गांवो में तथा 19 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 223 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, कोटा द्वारा 286 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 8, 9, 10, 17, 18, 19, 22, 23 एवं 25 जनवरी को गांव खेड़ली परसराम, नाहरिया, पीतमपुरा, बीलोंट, पानाहेरा, उमरेडी, बगावदा, डगारिया एवं बिसलाई गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 286 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ़) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 4, 5, 10, 11, 18, 19 एवं 21 जनवरी को गांव भाटियों का खेड़ा, खोर,सेमलिया, पंचतोली, जीतावल, कथांरिया एवं बिलोदा गांवो में तथा 8, 15 एवं 22 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 317 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वीयूटीआरसी, धौलपुर द्वारा 322 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 16, 17, 19, 21 एवं 25 जनवरी को गांव राजा का नगला, रोहई, फूटे कानगला, बसई मुरली एवं नक्सोदा गांवों में तथा दिनांक 18, 22 एवं23 जनवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 322 पशुपालकों ने भाग लिया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, जोधपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 15, 16, 19, 23, 24 एवं 25 जनवरी को गांव राजासनी, रामदेवरा राजासनी, चैनसिंह नगर, नागेश्वर नगर, जुगतसिंह नगर एवं बालरवा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 40 महिला पशुपालकों सहित कुल 172 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा गोष्ठी व प्रशिक्षण

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर द्वारा 3, 5, 8, 24 एवं 25 जनवरी को गांव 22–23 एनटीआर, सरदारगढ़ीया, थालड़का, ढ़ाणी अराईयान एवं छानी बड़ी में एक दिवसीय कृषक–पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इस शिविर में 152 कृषक–पशुपालकों ने भाग लिया।

पशु रोगों के निदान हेतु मूत्र व रक्त सम्बन्धी आवश्यक जैवरासायनिक परीक्षण

1. मूत्र की जांच – जब पशु के मूत्र का रंग, संगठन और मात्रा आदि में किसी प्रकार का असामान्य बदलाव दिखाई दें या फिर वृक्क, मूत्राशय और यकृत से संबंधित रोग के लक्षण दिखाई दें या डायबिटिज, ऐसीडोसिस, एल्कलोसिस, किटोसिस इत्यादि रोगों की संभावना हो तथा उस रोग की पुष्टि करनी हो या पशु की वृहद शल्य क्रिया करवाने से पहले या जब पशु ऐसी बीमारी से ग्रस्त हो, जिसका निदान नहीं हो पा रहा तो ऐसी अवस्थाओं में पशु का मूत्र परीक्षण करवाना चाहिए।

आवश्यक सामग्री : साफ ग्लास बायल, टेस्ट ट्यूब, 40 प्रतिशत फार्मेलिन।

नमूना एकत्रित करना– मूत्र की सामान्य गुणात्मक जांच के लिए सैम्पल किसी भी समय लिया जा सकता है। वृक्क से संबंधित रोगों की जांच हेतु सैम्पल सुबह के समय लेना चाहिए। डायबिटिज के निदान के लिए खाने से पहले व खाने के दो घंटे बाद का नमूना लेकर मूत्र की जांच करवानी चाहिए। साफ सूखी ग्लास वायल या परखनली में लगभग 8–10 मिली. मूत्र एकत्रित कर शीघ्र जांच हेतु भेजें, देरी की स्थिति में उसमें 1–2 बूंद 40 प्रतिशत फार्मेलिन डालें। बैक्टीरियल कल्चर सेन्सीटिविटी टेस्ट के लिए मूत्र का नमूना मादाओं में केथेटर की सहायता से स्टरलाइज्ड टेस्ट ट्यूब में एकत्रित किया जाता है व इसमें कोई परिरक्षक (Preservative) मिलाएं बिना बर्फ पर भेजा जाता है।

मूत्र का भौतिक परीक्षण :

1. मात्रा– पूरे दिन में मूत्र की कुल मात्रा का पता 24 घण्टे के दौरान एकत्रित किए गए मूत्र से चलता है।

कम मात्रा– डीहाइड्रेशन, एक्यूट ग्लोमेरूलो नेफ्राइटिस, बुखार, रक्त दाब कम होना, वातावरण का तापमान बढ़ने के कारण, यूरीनेरी ट्रेक्ट ऑब्स्ट्रक्शन, अल्प द्रव्य अंतग्रहण आदि को दर्शाता है।

ज्यादा मात्रा – डायबिटिज, क्रोनिक नेफ्राइटिस, पायोमेट्रा, पायलोनेफ्राइटिस, अत्यधिक द्रव्य अंतग्रहण आदि को दर्शाता है।

अनुरिया– यह मूत्र की कुल हानि अर्थात मूत्र निर्माण की प्रक्रिया का बंद हो जाना।

2. रंग– अत्यधिक पीला बुखार में, लाल हीमेचुरिया में, कॉफी रंग हीमोग्लोबिनुरिया आदि को दर्शाता है। मूत्र के रंग को स्पेसिफिक ग्रेविटी एवं यूनिन की मात्रा को ध्यान में रखकर देखना चाहिए। यूरीन का पीला रंग यूरोक्रॉम वर्णक की वजह से होता है। यूरीन की मात्रा ज्यादा होगी तो यूरोक्रॉम की सान्द्रता कम होगी। अतः मूत्र कम पीला और आमतौर पर कम स्पेसिफिक ग्रेविटी वाला होगा।

3. पारदर्शिता– आमतौर पर ताजा मूत्र प्रकाश में देखने पर पारदर्शी होता है। घोडों में मूत्र केल्शियम कार्बोनेट क्रिस्टल एवं म्यूकस की वजह से गाढ़ा व धुंधला होता है। मूत्र में अत्याधिक मात्रा में एपिथीलीयम कोशिकाएं, श्वेत रक्त कणिकाएं, लाल रक्त कणिकाएं, बैक्टीरिया, म्यूकस, क्रिस्टल आदि मूत्र को अल्प या अपारदर्शी बनाते है। इनका पता मूत्र की सूक्ष्मदर्शीय जांच से चलता है।

4. गंध– मूत्र में सामान्यतया एरोमेटिक गंध होती है। जीवाणु संक्रमण के कारण मूत्र में अमोनिकल गंध उत्पन्न होती है। किटोसिस नामक रोग होने पर मूत्र से मीठे फल जैसी गंध आती है।

5. स्पेसिफिक ग्रेविटी– सामान्य 1.001 से 1.060, यह मूत्र में घुले हुए पदार्थ की मात्रा पर निर्भर करती है एवं यह किडनी द्वारा मूत्र को सान्द्र या तनु करने की क्षमता को दर्शाती है।

स्पेसिफिक ग्रेविटी का बढ़ना – उल्टी, दस्त, शरीर में पानी की कमी, मूत्र में ग्लूकोज (डायबिटीज), प्रोटीन का उपस्थित होना, एक्यूट नेफ्राइटिस आदि को दर्शाता है।

स्पेसिफिक ग्रेविटी का घटना – क्रोनिक नेफ्राइटिस, अधिक पानी पीना, डायबिटिज इन्सीपीडस आदि।

6. पी.एच. (pH) –pH स्ट्रिप से मूत्र की जांच बाजार में उपलब्ध सबसे सरल तरीका है, जिसे कभी भी उपयोग में लाया जा सकता है।

pH स्ट्रिप पर मूत्र की दो या तीन बूंदें डालकर pH का तुरन्त पता लगाया जा सकता है। शाकाहारी पशुओं जैसे गाय, भैंस, भेड़ एवं बकरी आदि में मूत्र सामान्यतया क्षारीय होता है व मांसाहारी पशुओं में मूत्र अम्लीय होता है।

अम्लीय pH :– अधिक मात्रा में प्रोटीन आहार लेने पर, बुखार में, भूखा रहने की स्थिति में मूत्र की pH अम्लीय हो जाती हैं।

क्षारीय pH :– मूत्राशय में सूजन, क्षारीययुक्त दवाई लेने पर इत्यादि।

मूत्र का जैवरायासयनिक परीक्षण (Biochemical Examination of Urine)

1. नाइट्राइट– मूत्र में सामान्यतया नाइट्राइट नहीं पाया जाता है। मूत्र में नाइट्राइट का होना यूरीनेरी ट्रेक्ट में जीवाणु संक्रमण को दर्शाता है। ऐसे मूत्र की जीवाणु संवर्धन परीक्षण करवाना चाहिए। कभी–कभी जीवाणु संक्रमण होते हुए भी मूत्र में नाइट्राइट नहीं पाया जाता है।

2. प्रोटीन– मूत्र में सामान्यतया प्रोटीन नहीं होता है। मूत्र में प्रोटीन वृक्क की बीमारी, यूरीनेरी ट्रेक्ट में जीवाणु संक्रमण, मायोग्लोबिनुरिया, हीमोग्लोबिनुरिया, बुखार, हृदय व यकृत की बीमारियां, अत्यधिक तनाव व मादा पशुओं में जननांगों से डिस्चार्ज आदि के कारण।

3. ग्लूकोज– सामान्यतया मूत्र में ग्लूकोज नहीं होता है। मूत्र में ग्लूकोज का होना ग्लाइकोसुरिया कहलाता है। इसका आंकलन रक्त में ग्लूकोज की मात्रा को ध्यान में रखते हुए करना चाहिए। रक्त में ग्लूकोज का अधिक मात्रा में होना हाइपरग्लाइसीमिया कहलाता है। रक्त में ग्लूकोज की मात्रा बढ़े बिना, मूत्र में ग्लूकोज का आना रिनल ट्यूबूलर डिसफंक्शन (डायबिटीज इन्सीपिड्स) को इंगित करता है।

4. कीटोन– सामान्यतया मूत्र में कीटोन बोडीज नहीं होती है। मूत्र में कीटोन बोडीज का होना क्टिोनूरिया कहलाता है। इसे रक्त में ग्लूकोज की मात्रा को दृष्टिगत रखते हुए देखना चाहिए। रक्त में ग्लूकोज की मात्रा कम होने (भ्लचवहपलबमउपं) के साथ किटोनूरिया, भूख अधिक वसायुक्त भोजन लम्बे समय से लेना, यकृत खराब होना तथा मिल्क फिवर की स्थिति में होता है। शाकाहारी पशुओं जैसे गाय, भैंस, भेड़ एवं बकरी आदि में इसका पाया जाना कीटोसिस नामक रोग को दर्शाता है। रक्त में ग्लूकोज की अधिक मात्रा के साथ कीटोनूरिया डायबिटिज मेलाइट्स की स्थिति में होता है।

5. बिलीरूबिन– मूत्र में सामान्य मात्रा से अधिक बिलीरूबिन का होना यकृतकोशिकीय रोग या पित्तवाहिका बाधा (ऑबस्ट्रक्शन) को इंगित करता है।

6. लाल रक्त कणिकाएं – लाल रक्त कणिकाओं का मूत्र में पाया जाना हिमेचुरिया कहलाता है। सामान्य मूत्र में रक्त नहीं होता है किन्तु सूक्ष्मदर्शी से देखने पर कुछ लाल रक्त कणिकाएं दिखाई दे सकती है। किडनी या

यूरीनेरी ट्रेक्ट की बीमारी, किडनी वर्म इन्फेस्टेशन, यूरोलिथिएसिस, हीमोप्रोटोजोन इंफेक्शन, एन्थ्रेक्स, लेप्टोस्पाइरोसिस, केनाइन हिपेटाइटिस, कॉपर, मर्करी व स्वीट क्लोवर पाइजनिंग आदि हिमेचुरिया पाया जाता है। मादा पशुओं में जेनाइटल ट्रेक्ट के स्त्राव से रक्त के मूत्र में मिलने से भी हिमेचुरिया हो सकता है।

7. श्वेत रक्त कणिकाएं– मूत्र में सामान्यतया बहुत कम संख्या में श्वेत रुधिर कणिकाएं पायी जा सकती है। किन्तु अधिक संख्या में श्वेत रक्त कणिकाओं का होना यूरिनोजेनाइटल ट्रेक्ट के इंफेक्शन को इंगित करता है।

8. हीमोग्लोबिन– हीमोग्लोबिन का मूत्र में उपस्थित होना हीमोग्लोबिनुरिया कहलाता है। सामान्यतया मूत्र में हीमोग्लोबिन नहीं होता है। यह अत्यधिक लाल रक्त कणिकाओं के टूटने की स्थितियों में होता है जैसे– बेसीलरी हीमोग्लोबिनुरिया, पोस्टपार्चुरेन्ट हीमोग्लोबिनुरिया, लेप्टोस्पाइरोसिस, बबेसियोसिस, फोटोसेन्सेटाइजेशन, सिवियरबर्न, केमिकल हीमोलाइटिक एजेन्ट, कॉपर, मर्करी, सल्फोनेमाइड, कुछ प्लान्ट टोक्सिसिटी इत्यादि।

9. मायोग्लोबिन–मायोग्लोबिन मांसपेशियों में पाया जाने वाला हीमोग्लोबिन है। मूत्र में इसके होने की स्थिति को मायोग्लोबिनुरिया कहते है। इससे मूत्र गहरा भूरा या काला हो जाता है जैसे – घोड़ों में एजोटूरिया नामक रोग।

10. रक्त का जैव रासायनिक परीक्षण :– इस परीक्षण से कई बीमारियों के निदान में मदद मिलती है। रक्त शरीर में होने वाली समस्त जैव रासायनिक क्रियाओं में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग लेता है। रक्त की बायोकेमिकल जांच में रक्त के कोशिकाय व रासायनिक संगठन में होने वाले परिवर्तनों के आधार पर रोग के कारक का पता लगाने में मदद मिलती है।

❖ **ग्लूकोज–** डाइबीटीज मेलाइट्स, पेनक्रीयेटाइटिस, क्रोनिक हीपेटाइटिस डिसीज, कोर्टीकोस्टेराईड थेरेपी आदि अवस्थाओं में रक्त ग्लूकोज की मात्रा सामान्य से बढ़ जाती है। कीटोसिस, भूख, पेनक्रीयेटीक ट्युमर, इन्सुलीन इन्जेक्शन, हाइपोथायरोइडिस्म आदि अवस्थाओं में रक्त में ग्लूकोज की मात्रा सामान्य से कम हो जाती है।

❖ **ब्लब यूरिया नाइट्रोजन–**हार्ट फैल्योर, शॉक, डिहाइड्रेशन, रीनल डिसीज, पोस्ट डिसीज, यूरिनेरी ट्रेक्ट ऑब्सट्रक्शन आदि अवस्थाओं में यह सामान्य की तुलना में बढ़ जाता है। कम प्रोटीनयुक्त आहार देने से यह सामान्य की तुलना में घट जाता है।

❖ **क्रीयेटीनीन–** हार्ट फैल्योर, शॉक, डिहाइड्रेशन, रीनल डिसीज, पोस्ट रीनल डिसीज, यूरिनेरी ट्रेक्ट ऑब्सट्रक्शन आदि अवस्थाओं में यह सामान्य की तुलना में बढ़ जाता है।

❖ **सीरम अमाइलेज–** एक्यूट पेनक्रीयेटाइटिस, सेलाइवरी डक्ट ऑब्सट्रक्शन, रीनल इनसफीसीएन्सी आदि अवस्थाओं में यह सामान्य की तुलना में बढ़ जाता है।

❖ **बिलीरूबिन–** अत्यधिक हीमोलाइसिस, लीवर रोग, बिलीयरी ऑब्सट्रक्शन आदि अवस्थाओं में यह बढ़ा हुआ पाया जाता है। एनीमिया आदि अवस्थाओं में यह सामान्य से कम पाया जाता है।

❖ **कोलेस्ट्रॉल–** डायबिटीज मेलाइट्स, लीवर डिसीज, रीनल डिसीज, हाइपोथायरोइडिस्म इत्यादि अवस्थाओं में बढ़ जाता है। हायपरथायरोइडिस्म आदि अवस्थाओं में इसकी मात्रा कम हो जाती है।

❖ **टोटल प्रोटीन–** हीमोकन्सनट्रेशन, डिहाइड्रेशन आदि में इसकी मात्रा बढ़ जाती है। कम प्रोटीनयुक्त राशन, हीमोरेज, स्ट्रेस आदि से इसकी मात्रा कम हो जाती है।

❖ **सीरम ग्लूटामिक ओक्सेलोएसीटीक ट्रांसअमीनेज–** मायोकार्डियल इन्फेक्शन, एक्यूट पेरीकार्डाइटिस, कन्जेस्टीव हार्ट फैल्योर आदि अवस्थाओं में इसकी मात्रा सामान्य की तुलना में बढ़ जाती है।

❖ **सीरम ग्लूटामिक पाररूविक ट्रांसअमीनेज–**हीपेटोसेल्यूलर डिसीज इत्यादि अवस्थाओं में इसकी मात्रा बढ़ जाती है।

डॉ. पवन कुमार मित्तल, डॉ. बरखा गुप्ता,
डॉ. गोविन्द सहाय गौत्तम
पीजीआईवीईआर, जयपुर
(मो. 9414857704)

पशुओं में लंगड़ा बुखार रोग की पहचान एवं प्रबंधन

लंगड़ा बुखार (ठप्पा रोग) एक जीवाणुजनित रोग है जो क्लोसट्रीडियम चौवाई नामक जीवाणु से होता है। यह गाय, भैंस, भेड़, बकरी में होने वाला रोग है जिसमें सभी उम्र के पशु प्रभावित होते हैं लेकिन कम उम्र के पशु बिना कोई लक्षण दिखाए ही मौत का शिकार हो जाते हैं। इस रोग के मुख्य लक्षणों में बुखार (कई बार बुखार नहीं भी आता है), जुगाली का बंद होना, तेज नाड़ी दर और सांस लेने में तकलीफ होना भी शामिल है। इस रोग में पशु के किसी भी भारी मांसल भाग (पुट्ठा, कंधा, जबड़ा, जीभ, कमर) में सूजन के साथ गैस भर जाती है, और इस सूजन वाले भाग को दबाने पर चट–चट की आवाज आती है। प्रारम्भ में सूजन वाला भाग गर्म होता है और इस भाग में बहुत दर्द होता है, 2–3 दिन के बाद सूजन वाला भाग काला पड़ जाता है, ठंडा हो जाता है और दर्द खत्म हो जाता है। तुरंत इलाज ना होने पर पशु की 1–2 दिन में मृत्यु हो जाती है। यदि प्रभावित मांसल भाग पर चीरा लगाया जायें तो काले रंग के खून के साथ गैस के बुलबुले निकलते हैं और बहुत बदबू आती है।

रोग का प्रबंधन –

1. इस रोग का टीकाकरण द्वारा बचाव संभव है अतः पशुपालक आवश्यक रूप से पशुओं का प्रतिवर्ष मानसून शुरू होने से पहले टीकाकरण करवा लें।
2. प्रभावित पशु के सूजन वाले मांसल भाग में असंख्य जीवाणु होते है जो मृत पशु द्वारा आस–पास की मिट्टी और वातावरण में फैलते हैं अतः इस रोग से मरने वाले पशु को बाड़े के बाहर एक निश्चित स्थान पर कम से कम 1.5 मीटर गड्ढ़ा खोदकर चूने तथा नमक के साथ ही दफना देना चाहिये।
3. पशु के बीमार होने पर निकटतम पशुचिकित्सालय में रोग की सूचना दें और प्रभावित पशु का तुरंत इलाज करवाएं, तथा जिन पशुओं का टीकाकरण न किया गया है तो तुरंत टीकाकरण करवाएं।

– प्रो. ए. के. कटारिया
प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–फरवरी, 2019

i 'k jkx	i 'k@i{kh idkj	{k=
पी.पी.आर.	भेड़, बकरी	नागौर, जोधपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, चूरू, सीकर, उदयपुर, पाली, सिरोही, जैसलमेर
चेचक / माता रोग	भेड़, ऊँट, बकरी	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सिरोही, जैसलमेर, कोटा, बूंदी, पाली
खुरपका–मुँहपका रोग	गाय, भैंस,बकरी, भेड़	दौसा, जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, सवाईमाधोपुर, अजमेर, अलवर, बारां, भरतपुर, श्रीगंगानगर, नागौर, सीकर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	जयपुर, धौलपुर, बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, टोंक, जोधपुर, जैसलमेर, पाली
लंगड़ा बुखार / ठप्पा रोग	गाय	चित्तौड़गढ़, हनुमानगढ़, जयपुर, जैसलमेर, सीकर, बीकानेर
गलघोंटू	गाय, भैंस	जयपुर, चित्तौडगढ, पाली, टौंक, भरतपुर, उदयपुर, अलवर, भीलवाड़ा, दौसा, टोंक, सीकर, जैसलमेर, झालावाड़
न्यूमोनिक पाश्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस	सीकर, नागौर, अलवर, झुन्झुनु, सवाईमाधोपुर, भरतपुर, जयपुर, हनुमानगढ़
प्लूरोन्यूमोनिया	बकरी	सीकर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, जोधपुर, जयपुर
सर्रा (तिबरसा)	भैंस, ऊंट	धौलपुर, श्रीगंगानगर, भरतपुर, हनुमानगढ़, कोटा, सीकर, डूंगरपुर, बारां
अन्तः परजीवी (एम्फीस्टोमीयेसिस, फेसियोलियेसिस)	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	भरतपुर, उदयपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, हनुमानगढ़, सवाईमाधोपुर, सीकर, बूंदी, झालावाड़
रानीखेत रोग (Ranikhet disease)	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्सीयस ब्रोंकाइटिस (Infectious Bronchitis)	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर। फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

सफलता की कहानी

डेयरी व्यवसाय अपनाकर दूसरों के लिये बने प्रेरणास्त्रोत

ग्राम डगारिया, तहसील दीगोद, जिला कोटा के पशुपालक महेश मीणा पुत्र हंसराज मीणा ने कृषि एवं पशुपालन का उचित सामंजस्य बनाकर पशुपालन को कृषि के साथ में अपनाकर अपनी सामाजिक व आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया है। ये शुरू में कृषि व्यवसाय को ही ज्यादा महत्व देते थे लेकिन इनके मन में पशुपालन को अपनाने की प्रबल इच्छा थी। इनके पास 50 बीघा जमीन है और कृषि के साथ–साथ पशुपालन करना उचित समझा। वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा इस गांव में पशुपालन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया था। उन्होनें शिविर के दौरान पशुपालन के बारे में सारी जानकारी विस्तृत रूप से प्राप्त की। इनके पास पहले दो– तीन गाय / भैंस थी। कुछ पशु ओर खरीद भी लाए। आज इनके पास कुल 15 पशु है जिनमें से 8 भैंसें दूध (प्रतिदिन 50 लीटर) देती है व एक गाय दूध (प्रतिदिन 5–7 लीटर) देती है। कुल 50–55 लीटर दूध प्रतिदिन का उत्पादन होता है। इस कार्य के लिए इन्होंने 3 लोगों को रोजगार भी उपलब्ध कराया है। कृत्रिम गर्भाधान से नस्ल सुधार के कारण ये इस तकनीक का प्रयोग अधिक करते हैं। पर्याप्त जमीन होने के कारण हरा चारा व सूखा चारा (भूसा / चावल की पुली) आदि अपने खेत से पूर्ति हो जाती है। महेश मीणा भविष्य में गिर नस्ल की देशी भारतीय गौवंश पर काम करने की सोच रखते हैं। ये पशुओं में होने वाली संक्रामक / मौसमी बीमारियों को पहले तो प्राथमिक उपचार के द्वारा ठीक करते हैं अन्यथा नजदीकी पशुचिकित्सालय से सम्पर्क करते है। महेश मीणा पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र–कोटा से निरन्तर सम्पर्क में रहते हैं। **सम्पर्क– श्री महेश मीणा, ग्राम–डगारिया मो. : 9636717720**

ऊंट में होने वाले प्रमुख रोग

निदेशक की कलम से...

प्रिय, किसान एवं पशुपालक भाइयों और बहनों !

वर्ष 2012 की पशु गणना के अनुसार भारत में ऊंटों की संख्या करीब 4 लाख है, जिसमें लगभग 81.37 प्रतिशत (3.25 लाख) ऊंट राजस्थान राज्य में है। इसके अलावा अन्य पड़ौसी राज्यों जैसे हरियाणा, गुजरात व पंजाब में लगभग 19 प्रतिशत ऊंट पाये जाते हैं। राज्य के बहुमूल्य पशुधन ऊंट का संरक्षण एवं संवर्द्धन किये जाने की दृष्टि से राज्य सरकार द्वारा इसे ''राज्य पशु'' घोषित किया है।उष्ट्र में होने वाले संक्रामक रोगों में जीवाणु जनित रोग, विषाणु जनित रोग, परजीवी जनित रोग, फफूंद जनित रोग पाए जाते हैं। जीवाणु जनित रोगं में ऊंटनियों में थनैला रोग, ब्रुसीलोसिस/माल्टा बुखार, क्षय रोग, एक्टिनोबेसिलोसिस प्रमुख हैं। उष्ट्र प्रजाति में होने वाले विषाणु जनित रोगों में चेचक रोग (माता रोग), मूमड़ी (कन्टेजियस इक्थायगा) प्रमुख हैं।परजीवी जनित रोगों में उष्ट्र विभिन्न प्रकार के आन्तरिक और बाह्य परजीवी रोगों से ग्रस्त होता है। इन रोगों के कारण काम करने की क्षमता व उत्पादकता प्रभावित होती है। मुख्य परजीवी रोगों में ट्रीपैनोसोमीऐसिस,सारकोपटीकोसिस, चींचड़ संक्रमण व जठारांत्र कृमिरोग का प्रबंधन ऊंट को स्वस्थ रखने के लिए जरूरी है। फफूंद जनित रोगों में थार मरूस्थल के तापमान व वर्षा ऋतु की नमी के कारण ऊंट की त्वचा पर कुछ विशेष फफूंद रोग पनपते हैं। त्वचा के ये फफूंद रोग आपसी संपर्क से पशुओं में फैलते हैं। शुरू में यह बीमारी टोलों में रखे गए जानवरों के एक–दो पशुओं में, तत्पश्चात यह अन्य स्वस्थ पशुओं में फैल जाती है। ऐसे में विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि बीमारी का पता चलते ही तुंरत प्रभाव से बीमार पशु को अन्य स्वस्थ पशुओं से अलग कर दें तथा बीमार पशु का इलाज करवाने के पश्चात ही अन्य स्वस्थ पशुओं के साथ आने दें। ऐसे कुछ रोगों के नाम जो उष्ट्र पालक खुद जानते हैं। ठीकरीया, टाट की बीमारी व दाद इत्यादि हैं। ऊंटनियों में प्रमुखता से खांसी एवं न्यूमोनिया आदि रोग पाये जाते हैं। ऊंटनियां अधिकतर सर्दऋतु के जनवरी या फरवरी माह में ब्याती हैं इसलिए टोरडियों को सर्दी लगने, खांसी और न्यूमोनिया होने की संभावना ज्यादा होती है। सर्दी लगने पर नाक से पानी आने लगता है। आरंभ में टोरड़ियों को सूखी खांसी अथवा धांसी आती है और सांस लेने में कठिनाई होती है तथा गले के नीचे सायं की आवाज आती है। यदि इसका इलाज नहीं किया गया तो यह न्यूमोनिया का रूप ले लेता है। न्यूमोनिया में हर समय ज्वर रहता है, पीड़ित बच्चा कांपता है, फेफड़े तथा पसलियों में दर्द के कारण कराहता है, सांस लेने में कठिनाई होती है, आंखे लाल हो जाती है। इलाज नहीं करवाने पर तीन से चार दिन में बच्चे की मृत्यु हो जाती है। पशु पालक समय पर पशु चिकित्सक की सलाह से उपचार करवाएं। **–प्रो. अवधेश प्रताप सिंह, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर मो : 9414139188**

मुस्कान !

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

माह के प्रथम गुरूवार एवं तृतीय गुरूवार को प्रसारित ''**धीणे री बात्यां**'' के अन्तर्गत **फरवरी 2019** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। पशुपालक भाई उक्त दिवसों को मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर लाभ उठाएं।

वार्ताकार	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
डॉ. निर्मल जैफ 9414468740 पी. जी. आई. वी. ई. आर., जयपुर	दुग्ध ज्वर : बचाव एवं उपचार	07.02.2019
प्रो. जे.एस. मेहता 9414278372 निदेशक क्लिनिक्स, राजुवास, बीकानेर	कृत्रिम गर्भाधानः पशुपालन मे नस्ल संवर्द्धन एवं उच्च प्रजनन क्षमता के लिए सर्वोत्तम तकनीक	21.02.2019

संपादक
प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
डॉ. नीरज कुमार शर्मा
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. अवधेश प्रताप सिंह द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. अवधेश प्रताप सिंह